तत्त्वार्थमणीप्रदीप - मनीषियों की दृष्टि में ...

● **जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक), जयपुर, २ नवम्बर, २०१३, वर्ष ३६, अंक १५**

महाशास्त्र **तत्त्वार्थसूत्र** अपर नाम **मोक्षशास्त्र** आचार्य उमास्वामी की अमर कृति है। डॉ. भारिल्ल की लेखनी से प्रसूत यह **तत्त्वार्थमणिप्रदीप** नामक कृति उसी तत्त्वार्थसूत्र महाशास्त्र की सरल-सुबोध भाषा टीका है।

इस टीका ग्रंथ में वे सब बातें तो हैं ही; जो तत्त्वार्थसूत्र पर लिखे अद्यावधि उपलब्ध सत्साहित्य में हैं। अनेक ऐसे प्रमेय भी प्रस्तुत हुए हैं, जिनके बारे में अभी मंथन नहीं हो पाया है। अन्यत्र दुर्लभ आध्यात्मिक पुट एवं आत्मोन्मुखी पुरुषार्थ की प्रेरणा भी इसकी अपनी विशेषता है। **– रतनचन्द भारिल्ल, संपादक**

● **समन्वय वाणी (पाक्षिक), जयपुर, १६ अक्टूबर, २०१३, वर्ष ३३, अंक २०**

डॉ. भारिल्ल की नवीन कृति **'तत्त्वार्थमणिप्रदीप'** महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र की सरल-सुबोध टीका है। अध्यात्मरस से भरपूर इस टीका ग्रन्थ में वह सबकुछ है, जिसकी आवश्यकता एक सामान्य जैनी को जैनदर्शन का परिचय प्राप्त करने के लिये आवश्यक है।

इस कृति का समादर न केवल मुमुक्षु समाज में, अपितु सम्पूर्ण जैन समाज में होगा; क्योंकि यह कृति सभी के लिये अत्यन्त उपयोगी है। **– अखिल बंसल, संपादक**

● **डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल, अमलाई; उपाध्यक्ष अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद्**

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र पर संस्कृत व हिन्दी भाषा में अनेक टीकाएँ उपलब्ध हैं; लेकिन विद्यमान परिप्रेक्ष्य में ऐसी टीका की आवश्यकता अनुभव की जाती रही, जिसमें अध्यात्म का भी समावेश हो। इस सन्दर्भ में डॉ. भारिल्ल की यह **'तत्त्वार्थमणिप्रदीप'** टीका न केवल मोक्षार्थियों को, अपितु इतर पाठकों को भी दीपस्तंभ का काम करेगी।

विषय विवरण में अन्य टीकाओं/विद्वानों के मतों का समावेश कर आगमोक्त/तार्किक निष्कर्ष दिये हैं, जो निर्मल प्रज्ञा के धारकों के लिए मार्गदर्शक हैं। इस सन्दर्भ में दूसरे अध्याय का सूत्र ५३ एवं पाँचवें अध्याय का सूत्र २१ दृष्टव्य है।

● **पण्डित शान्तिकुमार पाटील, उपप्राचार्य- श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर**

तत्त्वार्थसूत्र सम्पूर्ण जैन समाज में सर्वाधिक पठन किया जाने वाला ग्रन्थ होने पर भी सामान्यजनों के साथ अनेक प्रबुद्धजन भी इसके अनेक सूत्रों का वास्तविक अर्थ व प्रयोजन नहीं समझ पाते हैं। कतिपय सूत्रों का तो अन्यथा अभिप्राय ग्रहण करते हैं।

जिनवाणी का तात्पर्य भेदविज्ञान व वीतरागता है। तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की नवीनतम कृति **'तत्त्वार्थमणिप्रदीप'** तत्त्वार्थसूत्र के सूत्रों का सरल-सुबोध अर्थ तो प्रस्तुत करती ही है, उनका आध्यात्मिक बोध कराते हुए आत्महित की प्रेरणा भी प्रदान करती है। अतः निश्चित ही यह कृति उपलब्ध तत्त्वार्थसूत्र की टीकाओं में एक चमकदार मणि की तरह अपना अलग ही प्रकाश बिखेरेगी।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2539) 364 अंक : 4

चेतन यह बुधि...

चेतन यह बुधि कौन सयानी, कही सुगुरु हित सीख न मानी।
कठिन काकताली ज्यौं पायौ, नरभव सुकुल श्रवन जिनवानी।।
चेतन यह बुधि... ।।1।।

भूमि न होत चाँदनी की ज्यौं, त्यौं नहिं धनी ज्ञेय को ज्ञानी।
वस्तुरूप यौं तू यौं ही शठ, हटकर पकरत सोंज विरानी।।
चेतन यह बुधि... ।।2।।

ज्ञानी होय अज्ञान राग-रुष कर निज सहज स्वच्छता हानी।
इन्द्रिय जड़ तिन विषय अचेतन, तहाँ अनिष्ट इष्टता ठानी।।
चेतन यह बुधि... ।।3।।

चाहै सुख, दुख ही अवगाहै, अब सुनि विधि जो है सुखदानी।
'दौल' आपकरि आप आपमैं, ध्याय ल्याय लय समरससानी।।
चेतन यह बुधि... ।।4।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

25 दोषों से रहित सम्यग्दृष्टि

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
मद न रूप को मद न ज्ञान को, धन-बल को मद भानै।।१३।।
तप को मद न मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै।।
कुगुरु-कुदेव-कुवृष सेवक की नहीं प्रशंस उचरे है।
जिन-मुनि-जिनश्रुत बिन कुगुरादिक तिन्हें न नमन करे है।।१४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

भरत चक्रवर्ती के पास छह खण्ड का राज्यवैभव था; तथापि वे जानते थे कि चैतन्य के अखण्ड वैभव के अतिरिक्त एक रजकण भी मेरा नहीं है, मैं उसका स्वामी नहीं हूँ। मैं छह खण्ड का स्वामी नहीं हूँ; अपितु अखण्ड आत्मा की अनुभूति का स्वामी हूँ। इसप्रकार वे चैतन्य की अनुभूति में बाह्यवैभव का स्पर्श भी नहीं होने देते थे। जिसने अतीन्द्रिय ज्ञान द्वारा आत्मसम्पदा के अचिंत्य वैभव का स्वसंवेदन किया, उसे जड़ या विकार के फल का अभिमान कैसे हो सकता है ? इसप्रकार धर्मी को धनमद नहीं होता। कोई अन्य धर्मात्मा-गुणवान जीव अशुभ कर्म के उदय से दरिद्र हो, तो उसके प्रति धर्मी को अवज्ञा या तिरस्कारबुद्धि नहीं होती। अरे, आत्मा के चैतन्यनिधान के निकट जगत् के वैभव को तुच्छ-सड़े हुए तृण समान समझकर, क्षणभर में छोड़कर, चैतन्य के केवलज्ञान निधान को साधने के लिए अनेक मुमुक्षु जीव मुनि होकर वन में चले गये। अज्ञानी जीव उस धनादि जड़ सामग्री के समक्ष अपने सुख की भीख माँगते हैं। ज्ञानी तो उसका त्याग करके अपने चैतन्यसुख की साधना करते हैं। अज्ञानी को पुण्यकर्म के उदय से धनादि सामग्री मिलने पर अभिमान हो जाता है। अरे भाई ! अपने इस अभिमान को छोड़

और अपने चैतन्यनिधान को देख। आत्मा की चैतन्यसम्पदा के सन्मुख तेरी इस जड़ विभूति का क्या मूल्य है !

देखो तो सही, सन्तों ने आत्मा के वैभव का जैसा वर्णन किया है; वैसा वैभव अन्तर में है, वही बताया है। जब ऐसे वैभव वाले अपने आत्मा को अनुभव में लिया, तब धर्मी को बाह्यधन आदि वैभव का मद नहीं रहता।

(६) बलमद – यह शरीर ही मैं नहीं हूँ, तो उसके बल का अभिमान कैसा? मेरा आत्मा अनन्त चैतन्य बल का धारक है; उसकी प्रतीति तो हुई; अब उसकी आराधना में ध्यान द्वारा ऐसा एकाग्र होऊँ कि चाहे जैसे उपसर्ग-परिषह आने पर भी चलायमान न होऊँ – ऐसी वीतरागी क्षमा दशा प्रगट करना ही आत्मा का सच्चा बल है। शारीरिक बल आत्मा को साधने में काम नहीं आता।

यद्यपि तीर्थंकरों का शारीरिक बल भी दूसरों की अपेक्षा उत्कृष्ट होता है; तथापि अन्तर में चैतन्य शक्ति की प्रतीति में वे अपने को देह से भिन्न जानते हैं। भरत और बाहुबली दोनों भाई आपस में लड़े, तथापि किसी को अपने शरीर का मद नहीं था। दोनों के अन्तर में भेदज्ञान का कार्य चल रहा था। युद्ध की क्रिया हुई, इसलिए देह के साथ एकत्वबुद्धि होगी – ऐसा रंचमात्र भी नहीं है। सहज अभिमान आया; लेकिन अंतर की चैतन्यपरिणति उस अभिमान से भिन्न ही कार्य कर रही थी; उसे ज्ञानी ही पहिचानते हैं।

भरत चक्रवर्ती क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे; उनके बल में जब अमुक सैनिकों ने शंका की, तब बल प्रदर्शन का विकल्प उठते ही भरत राजा ने अपनी अंगुली टेढ़ी कर दी और सैनिकों से कहा कि मेरी यह अँगुली टेढ़ी हो गई है, इसे सीधी कर दो। सैनिकों ने बहुत जोर लगाया; परन्तु अँगुली को सीधा न कर सके। अन्त में एक साँकल अँगुली के साथ बाँधकर ९६ करोड़ पैदल सेना ने उसे खींचा। चक्रवर्ती ने तर्जनी ऊँगली का जरा-सा झटका दिया कि सारे सैनिक पृथ्वी पर गिर पड़े – ऐसा तो उनका शारीरिक बल था और इसप्रकार का विकल्प भी आया, लेकिन शरीर और विकल्प दोनों से भिन्न अनन्त चैतन्यशक्ति से सम्पन्न ही वे अपने को देखते हैं। ऐसी चैतन्यदृष्टि में उन्हें शरीर का मद रंचमात्र नहीं होता।

ऐसा ही एक प्रसंग नेमिनाथ तीर्थंकर और श्रीकृष्ण के बीच बना था। यादवों की सभा में एक बार शरीर-बल की चर्चा चल उठी। नेमिकुमार और श्रीकृष्ण दोनों चचेरे भाई थे। श्रीकृष्ण बड़े और नेमिकुमार छोटे थे; छोटे होने पर भी तीर्थंकर थे। वे भी सभा में गंभीर रूप से बैठे थे। सभा में किसी ने श्रीकृष्ण के बल की प्रशंसा की, किसी ने नेमिकुमार के बल की। किसका बल अधिक है, उसकी परीक्षा करने का निर्णय हुआ। उसी समय नेमिकुमार ने तर्जनी अँगुली बढ़ाकर कहा कि यदि आप में बल हो तो इसे मोड़ दो। श्रीकृष्ण तो उस अँगुली पर तुल गये, तथापि उसे मोड़ न सके। ऐसा अचिंत्य शरीर-बल होने पर भी उस समय आत्मा को सर्वथा उससे भिन्न ही जानते थे। सम्यक्त्व में आठों मद का अभाव था। अस्थिरता का विकल्प आया; परन्तु उसमें सम्यक्त्व संबंधी कोई दोष न था। ऐसे सम्यक्त्व को पहिचान कर उसकी आराधना करने का उपदेश है।

धर्मात्मा को प्राकृतिकरूप से पुण्य का वैभव होता है, लेकिन वह जानता है कि इस पुण्य के वैभव में हम नहीं हैं। हमारे चैतन्य का वैभव इससे निराला है। हमारा सामर्थ्य हमारे अंतर में समाया है। हमारे चैतन्य का बल शरीर में नहीं है। ऐसी प्रतीति में धर्मी को बल का मद नहीं होता। जो शरीर से धर्म होना मानते हैं, उन्हें मद हुए बिना नहीं रहता।

(७) तपमद – स्वयं कोई उपवास, स्वाध्यायादि तप करता हो और अन्य धर्मात्मा को उपवासादि की विशेषता न हो, वहाँ धर्मी जीव अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा मानकर तपमद नहीं करता। अहा, सच्चे तपस्वी तो वे शुद्धोपयोगी मुनि भगवन्त हैं कि जो चैतन्य के उग्र प्रतपन द्वारा वीतरागभाव प्रगट करके कर्मों को भस्म कर देते हैं, मैं तो अभी प्रमाद में ही पड़ा हूँ। शरीर की निर्बलता से कोई उपवासादि तप न कर सकता हो, लेकिन ज्ञान-ध्यान की उग्रता द्वारा आत्मा की शुद्धता की वृद्धि करता हो, वह धन्य है। इसप्रकार सम्यग्दृष्टि को तप का मद नहीं होता। मद तो कषाय है और तप कषाय नष्ट करने के लिए है।

(८) ऐश्वर्यमद – पूज्यपने का मद अथवा अधिकार का मद धर्मात्मा को नहीं होता। हम तो सर्वज्ञ के पुत्र हैं। हमारा पद तो सर्वज्ञपद है, अन्य कोई हमारा

पद नहीं। केवलज्ञान द्वारा ही हमारी महत्ता है, इसके अतिरिक्त बाह्य में राज्यपद या प्रधानपद द्वारा हमारे आत्मा की महत्ता नहीं - ऐसा जानने वाले धर्मी को बाह्य महत्ता का मद नहीं होता। पुण्य के योग से बाह्य महत्ता अधिक हो; परन्तु उसके कारण अपने आत्मा की महत्ता धर्मी नहीं मानते।

श्रीमद् राजचन्द्र ने कहा है कि - **'लक्ष्मी अने अधिकार बधतां शुं वध्युं ते तो कहो ?'** यह तो सब संसार का ठाठ-बाट है; इसमें कहीं आत्मा की शोभा नहीं है। मेरा आत्मा स्वयंसिद्ध परमेश्वर है, उसके समक्ष ऐसा कौन-सा ऐश्वर्य या महत्ता है कि जिसका मैं मद करूँ ? अरे, राग और राग का फल तो अपद हैं, अपद हैं। लोग बाह्य पदवी के लिए लालायित रहते हैं; लेकिन धर्मी जानता है कि मेरे चैतन्य के पद के सन्मुख चक्रवर्तीपद भी तुच्छ प्रतीत होता है। ऐसा चैतन्यपद जिसने प्राप्त किया है, जाना है और अनुभव किया है, वह अन्य किस पद का अभिमान करे ? अहा, तीन लोक में सबसे उच्च मेरा चैतन्यपद मैंने अपने अन्तर में देखा है। अन्तर में आनन्द की अपूर्व वीणा बजी है। अतीन्द्रिय सुख की तरंगों से चैतन्य-समुद्र उमड़ पड़ा है - ऐसा आनन्दस्वरूप मैं स्वयं हूँ...आनन्द से उच्च जगत में दूसरा क्या है? ऐसी आत्मानुभूति द्वारा धर्मात्मा को जगत के ऐश्वर्य का मोह नष्ट हो गया है, इसलिए उसे ऐश्वर्य का मद नहीं होता।

उच्च अधिकार हों, लाखों-करोड़ों लोगों में पुजता हो, सम्पूर्ण देश में आज्ञा चलती हो; लेकिन उसके द्वारा धर्मी अपने आत्मा की रंचमात्र भी महानता नहीं मानता। मेरी महानता तो मेरे स्वभाव में ही है, दूसरे मुझे क्या महत्ता देंगे ? दूसरों के पास महानता लेने जाना पड़े - ऐसा पराधीन मैं नहीं हूँ। इसप्रकार धर्मी को बड़प्पन का मद नहीं होता; उसीप्रकार अन्य जीव अशुभकर्म के उदय से दरिद्र हो, उसकी अवज्ञा भी नहीं करता। बाह्य ऐश्वर्य हो या न हो, वह तो कर्मकृत (कर्मों का फल) है। उसका स्वामित्व धर्मी को नहीं है। मिथ्यादृष्टि बड़ा राजा हो और सम्यग्दृष्टि उसकी नौकरी करता हो - यह तो सब शुभाशुभ कर्म का खेल है, इनसे धर्मी अपने को दीन नहीं मानता। अपने अक्षय ज्ञानादि अनन्त ऐश्वर्य को वह अपने में देखता है। इसप्रकार धर्मी को मद या दीनता का अभाव है।

(क्रमशः)

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार के 72वें श्लोक पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

श्लोक मूलतः इसप्रकार है -

शुद्धाशुद्धविकल्पना भवति सा मिथ्यादृशि प्रत्यहं
शुद्धं कारणकार्यतत्त्वयुगलं सम्यदृशि प्रत्यहम्।
इत्थं यः परमागमार्थमतुलं जानाति सद्दृक स्वयं
सारासारविचारचारुधिषणा वन्दामहे तं वयम्।।७२।।

शुद्ध है यह आतमा अथवा अशुद्ध इसे कहें।
अज्ञानि मिथ्यादृष्टि के ऐसे विकल्प सदा रहें।।
कार्य-कारण शुद्ध सारासारग्राही बुद्धि से।
जानते सद्दृष्टि उनकी वंदना हम नित करें।।७२।।

शुद्ध-अशुद्ध की विकल्पना मिथ्यादृष्टि को सदैव होती है; सम्यग्दृष्टि की तो सदा ऐसी मान्यता होती है कि कारणतत्त्व और कार्यतत्त्व दोनों शुद्ध हैं।

इसप्रकार परमागम के अतुल अर्थ को सारासार के विचारवाली सुन्दर बुद्धि द्वारा जो सम्यग्दृष्टि स्वयं जानता है, उसे हम वन्दन करते हैं।

(गतांक से आगे ...)

मिथ्यादृष्टि जीव को अपने स्वरूप में सदा शंका होती है।

मिथ्यादृष्टि जीव को अपने आत्मा के स्वरूप में सदा शंका रहती है। आत्मा त्रिकाल शुद्ध है या अशुद्ध ? - ऐसी शंका रहती है। शरीर और कर्म जड़पदार्थ 'पर' हैं और विकार एक समय मात्र का है, दो समय का कभी नहीं हुआ, विकार से रहित त्रिकाली शुद्ध आत्मा अन्दर पड़ा है - इसकी शंका रहती है।

शास्त्र में अशरीरी, अतीन्द्रिय, अविनाशी, द्रव्यकर्म-भावकर्म रहित आत्मा कहा है - यह बात उसे नहीं जमती। अज्ञानी वर्तमान विकार का सेवन करता है।

जिसप्रकार तिल को पेलने से तेल निकलता है, कंकड़-पत्थर पेलने से नहीं;

जिसप्रकार लेंडीपीपल कच्ची खाने से चौसठ पहरी चरपराहट का अनुभव नहीं होता; जिसप्रकार मयूर के अण्डे में मयूर बनने की शक्ति है – वह अण्डे को खड़खड़ाने से ज्ञात नहीं हो सकती; परन्तु उसकी शक्ति में से साढ़े तीन हाथ का मयूर बन जाता है, बाहर के छिलके में से नहीं होता; उसीप्रकार भगवान आत्मा विकार रहित है, उसकी शक्ति में से स्वभाव प्रस्फुटित होकर सिद्ध होता है, पुण्य-पाप के भाव में से सिद्धत्व प्रकट नहीं होता; किन्तु क्या करें? अज्ञानी को इस बात का विश्वास ही नहीं होता। निमित्त हो, शुभभाव हो तो सिद्धदशा हो – ऐसी मिथ्या मान्यता करने के कारण संसार चालू है।

सम्यग्दृष्टिजीव कारणतत्त्व और कार्यतत्त्व दोनों को शुद्ध मानता है।

धर्मीजीव को ऐसी प्रतीति है कि परमात्मा जिसको कार्य प्रकट हो गया है और कारणपरमात्मा जो अनादि-अनन्त मेरे में पड़ा है – इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है, दोनों ही शुद्ध हैं। पर्याय में शुभाशुभभाव होने पर भी मेरा स्वभाव कभी विकारी नहीं हुआ, वह तो सदा शुद्ध ही है। मिथ्याश्रद्धा छोड़कर सम्यक्श्रद्धा करूँ, मिथ्याज्ञान छोड़कर सम्यग्ज्ञान करूँ – ऐसा भेद कारणपरमात्मा में नहीं है। कारणतत्त्व एकस्वरूप में विराजता है, वह सदा शुद्ध है; और सिद्धभगवान को प्रकट होने वाला कार्यतत्त्व भी शुद्ध है – इन दोनों तत्त्वों में कोई अन्तर नहीं है, दोनों शुद्ध हैं – ऐसा सम्यग्दृष्टि मानता है।

परमागम के रहस्य के ज्ञाता सुन्दर बुद्धिवाले भावलिंगी मुनिराज को नमस्कार।

इसप्रकार भगवान की वाणी से रचित परमागम के गंभीर अर्थ को सारासार के विचारवाली सुन्दरबुद्धि से जो सम्यग्दृष्टि मुनि स्वयं जानते हैं, उनको हम वन्दन करते हैं।

परमागमों में क्या कहा? दया-दानादि विकार असार हैं और त्रिकाल ज्ञातादृष्टा शुद्धस्वरूप एक ही सार है। मुनियों को सारासार की विवेक-बुद्धि है और मानते हैं कि मैं तो त्रिकालशुद्ध हूँ। सम्यग्दृष्टिपना अथवा मिथ्यादृष्टिपना, त्यागपना अथवा अत्यागपना, यह सब पर्याय में है, सम्यग्दर्शन के ध्येय में ऐसा भेद नहीं है, उसका

ध्येय तो अखण्ड शुद्धात्मा है; पुण्य-पाप भाव आते हैं उनको व्यवहार से जानते हैं; किन्तु उनसे सम्यग्दर्शन टिकता है अथवा चारित्र बढ़ता है – ऐसा नहीं मानते। शुद्धस्वभाव के अवलम्बन से वह टिकता है और बढ़ता है तथा वही एक मोक्ष का साधन है – ऐसा वे मानते हैं।

पुनश्च, इस बात को मुनि स्वयं जानते हैं, किसी शास्त्र से अथवा गुरु से जानते हैं – ऐसा नहीं कहा; अपितु स्वयं से जानते हैं, अर्थात् मोक्ष के लिए साधन मैं स्वयं हूँ, दूसरा कोई नहीं है। टीकाकार मुनिराज कहते हैं कि ऐसे धर्मात्मा भावलिंगी मुनि जो सुन्दर बुद्धिवाले हैं और जो साररूप तत्त्व स्वयं जानते हैं, उन्हें हम वन्दन करते हैं। यह टीकाकार मुनिराज की निर्मानता का द्योतक है। ●

हार्दिक बधाई

जयपुर (राज.) : यहाँ सी-स्कीम स्थित महावीर स्कूल में **पुरस्कृत शिक्षा फोरम, राजस्थान** द्वारा टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक **श्री संजयकुमारजी शाह बांसवाड़ा** को दिनांक 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर **शिक्षाविद् तेजकरण डंडिया स्मृति शिक्षक पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री शाह को माननीय संस्कृत शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार द्वारा शॉल ओढाकर व 5100/- रुपये का चैक, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

धन्यवाद

बैद श्री शान्तिशरणजी जैन (मैनपुरी वालों) की दिनांक 27 दिसम्बर 2013 को 13वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी पुत्री-दामाद श्रीमती रमा जैन ध.प. श्री राकेशचंदजी जैन (महावीर स्कूल) जयपुर की ओर से 1 विद्यार्थी के अध्ययन हेतु 30 हजार रुपये की राशि पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट हेतु सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : धर्म प्राप्त करने के लिए प्रथम क्या निर्णय करें ?

उत्तर : त्रिकाली द्रव्य के आश्रय से ही धर्म होता है - ऐसा प्रथम निर्णय करना चाहिए, जिससे परलक्षीभाव की अनुमोदना न हो। प्रथम श्रद्धा-ज्ञान सम्यक् होते हैं और बाद में सम्यक्चारित्र होता है; तथापि क्या करें ? लोग बाह्य क्रियाकाण्ड में चढ गए हैं, इसलिए उन्हें कठिन लगता है। आत्मा स्वभाव से तो प्रभु है, क्षण में पलट जायेगा, एक क्षण की भूल है, वह एक क्षण में टल भी सकती है।

प्रश्न : परवस्तु से आत्मा को लाभ-हानि नहीं है। आत्मा के अकल्याण का कारण राग है - ऐसा आप कहते हैं। क्या उस राग से भी अधिक अकल्याण का कारण कोई अन्य भी है ?

उत्तर : कोई भी परवस्तु अथवा देव-गुरु-शास्त्र आदि इस जीव को कल्याण-अकल्याण का कारण नहीं है। मात्र अपनी पर्याय में सच्ची समझ और स्थिरता ही कल्याण का कारण है तथा विपरीत समझ और रागादि ही अकल्याण का कारण है। यद्यपि राग इस जीव को अकल्याण का ही कारण है; तथापि रागभाव से जितना अकल्याण होता है, उसकी अपेक्षा अनन्तगुना अकल्याण 'राग से आत्मा को लाभ होता है' अथवा 'राग में धर्म है'- इस विपरीत मान्यता से होता है। ऐसी विपरीत मान्यतावाला जीव त्यागी और पण्डित होने पर भी महासंसार में भटकता है।

प्रश्न : धर्म का प्रारम्भ किसके आश्रय से होता है ?

उत्तर : एक स्वद्रव्य का आश्रय करने से ही धर्म का प्रारम्भ होता है, इसके विपरीत लाख परद्रव्य का आश्रय करे तथापि धर्म का प्रारम्भ हो सकता नहीं। पर्याय द्रव्य की तरफ ढले, द्रव्य का आश्रय ले - इसी प्रयोजन से समस्त वाँचन, विचार, मनन, श्रवण करना चाहिए; क्योंकि मूल अभिप्राय तो द्रव्य का आश्रय लेना ही है।

प्रश्न : जीव का मूल प्रयोजन क्या है और उसके कितने प्रकार हैं ?

उत्तर : जीव का मूल प्रयोजन वीतरागभाव है। उस वीतरागभाव के दो प्रकार हैं - (1) दृष्टि में वीतरागता और (2) चारित्र में वीतरागता। प्रथम दृष्टि में वीतरागता

होती है, जो कि सम्यक्त्व का कारण है। मेरे अभेद चैतन्यस्वभाव में राग नहीं; पर्याय में राग होता है, वह सम्यग्दर्शन या वीतरागी दृष्टि का कारण नहीं। यदि उस राग के साथ एकता की जाए तो मिथ्यात्व का कारण है और उस राग का आश्रय छोड़कर स्वभाव की एकता की जाए तो सम्यक्त्व का कारण है। इसप्रकार स्वभाव की मुख्यता करने पर वीतरागी दृष्टि प्रगट होती है और तब राग का निषेध स्वयं हो जाता है। इसके पश्चात् ही वीतरागी चारित्र प्रगट होता है।

प्रश्न : 'द्रव्यानुसारि चरणं, चरणानुसारि द्रव्यं' अर्थात् द्रव्यानुसारी चरण और चरणानुसारी द्रव्य - इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर : छठे गुणस्थान में जो शुद्धता होती है, वह द्रव्य के ही आश्रय से होती है; परन्तु यहाँ राग की मन्दता कितने अंशों में है, उसके ज्ञान से शुद्धता कितनी है - यह देखा जाता है। आश्रय का अर्थ यह नहीं है कि राग के आश्रय से धर्म होता है। शुद्धता जितने प्रमाण में होती है, उतने ही प्रमाण में राग की मन्दता होती है और राग की मन्दता जितनी होती है, उसी प्रमाण में शुद्धता भी अपने अर्थात् शुद्धता के कारण से होती है। इसी को 'द्रव्य अनुसारी चरण तथा चरण अनुसारी द्रव्य होता है'- ऐसा कहा जाता है। ऐसा प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन के अन्त में श्लोक 12 में कहा गया है।

प्रश्न : परद्रव्य के जानने की तरफ परणति जाए अर्थात् उपयोग बाह्य में भटके, उस समय वीतरागता बनी रहती है अथवा नहीं ?

उत्तर : स्वाश्रय से जितनी वीतराग परणति हुई है, उतनी वीतरागता तो परज्ञेय की तरफ लक्ष्य जाने के समय भी टिकी रहती है। परन्तु साधक को परज्ञेय की तरफ उपयोग के समय पूर्ण वीतरागता नहीं है अर्थात् राग और विकल्प है; क्योंकि परज्ञेय की ओर उपयोग हो और उस समय सम्पूर्ण वीतरागता हो - ऐसा नहीं बन सकता, वहाँ राग का अवश्य सद्भाव है; परन्तु उस भूमिका में जितनी वीतरागता हो चुकी है, उतनी तो हर समय टिकी ही रहती है। जैसे चतुर्थ गुणस्थान में परलक्ष्यी उपयोग के समय भी अनन्तानुबन्धी राग-द्वेष का तो अभाव ही है; उसी प्रकार छठे गुणस्थान में परलक्ष्य के समय भी तीन कषायों का अभाव होने से तत्सम्बन्धी राग-द्वेष भी नहीं है अर्थात् इतनी वीतरागता तो हर समय विद्यमान ही रहती है। केवली भगवान पर को भी जानते हैं; परन्तु उन्हें अपना उपयोग पर में लगाना नहीं पड़ता। उनका उपयोग तो स्व में ही लीन है।

समाचार दर्शन -

16वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा दिनांक 6 से 15 अक्टूबर 2013 तक 16वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री नरेशजी मोदी नागपुर के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री विवेकजी काला, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा एवं डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सभी विद्वत्गण मंचासीन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री महावीरप्रसादजी कोलकाता, श्री मुकेशजी जैन ढाइद्वीप इन्दौर, श्री अनूपजी नजा ललितपुर, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर, श्री सुमनभाई दोशी, राजकोट, श्री ताराचन्दजी सोगानी जयपुर, श्री के.एल. जैन बाँसवाड़ा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन परिवार जयपुर, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा एवं मंच का उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया।

मंगलाचरण कु. परिणति पाटील जयपुर, मंच संचालन श्री शुद्धात्म प्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने तिलक लगाकर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने माल्यार्पणकर सभी अतिथियों का स्वागत किया।

प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार (गाथा 321-344 तक) पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार (7वीं गाथा) पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचनसार (गाथा 11-12) पर प्रवचनों के पूर्व डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा एवं डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली आदि विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें – षट्कारक पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, **गुणस्थान विवेचन** पर ब्र. यशपालजी जैन द्वारा, **छ: सामान्य गुण** पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा,

नयचक्र व मोक्षमार्गप्रकाशक पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा 116-125)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रात: 5.30 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के 47 शक्तियों पर व्याख्यान के तत्काल बाद 7.00 बजे तक जी-जागरण चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर प्रोजेक्टर द्वारा किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन (प्रवचनसार गाथा 320) के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत दो विद्वानों के प्रवचन का लाभ मिलता था, जिनमें पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान जयपुर, पण्डित अरुणजी बण्ड जयपुर, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर, डॉ. नीतेशजी शास्त्री डडूका, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल बालकक्षायें डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा चलाई गई।

शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे एवं शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री चिद्रुप बेलजीभाई शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा, श्री अजितप्रसाद वैभवकुमारजी जैन परिवार दिल्ली एवं श्री अनिलकुमार ज्ञानचन्दजी जैन (जैनको) इन्दौर थे।

इस शिविर में पंचपरमेष्ठी विधान एवं रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रकाशचन्दजी छाबड़ा सूरत, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा की स्मृति में श्रीमती श्रीकान्ताबाई छाबड़ा जयपुर, श्री भरत कुमार एन.मेहता सूरत, श्रीमती शशि-अजितजी तोतुका जयपुर, श्री सुधाकर अमोल अम्बेकर औरंगाबाद, श्रीमती कल्पना नरेन्द्रकुमारजी बड़जात्या जयपुर थे।

शिविर के समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में 36 विद्वानों के माध्यम से लगभग 650 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग 26 हजार 500 घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

आचार्यकल्प टोडरमलजी और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक विषय पर –

राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 16वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 12 से 14 अक्टूबर तक श्री टोडरमल स्नातक परिषद् एवं अखिल भारतवर्षीय दि.जैन विद्वत्परिषद् द्वारा **'आचार्यकल्प टोडरमलजी और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक'** विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के प्रथम सत्र में दिनांक 12 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अध्यक्षता की एवं मुख्य अतिथि श्री कान्तिभाई मोटानी मुम्बई, श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल व श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल मंचासीन थे।

वक्ताओं के रूप में डॉ. राजीवजी प्रचंडिया अलीगढ (टोडरमलजी की सामायिक परिस्थितियाँ और मोक्षमार्गप्रकाशक की पृष्ठभूमि), डॉ. संजयजी जैन भोगाँव दौसा (मोक्षमार्गप्रकाशक : भाषा शैली की दृष्टि से) एवं डॉ. अरुणजी बंड जयपुर (करणानुयोग में द्रव्यानुयोग सुन्दर प्रयोग दूसरा व तीसरा अध्याय) ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंच संचालन श्री अखिलजी बंसल एवं मंगलाचरण श्री गौम्मटेश शास्त्री ने किया।

दिनांक 13 अक्टूबर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता स्नातक परिषद के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्रजी जैन बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली व श्री जिनेन्द्रजी जैन दिल्ली मंचासीन थे।

इस सत्र में डॉ. पी.सी.रांवका जयपुर (पण्डित टोडरमलजी : इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व), डॉ. महेशजी जैन भोपाल (पंचपरमेष्ठी का स्वरूप, पूज्यत्व एवं प्रयोजन सिद्धि एक नई दृष्टि), डॉ. दीपकजी जैन जयपुर (अगृहीत मिथ्यात्व नई दृष्टि से विवेचन : चतुर्थ अध्याय) एवं डॉ. जयन्तीलाल चेन्नई मंगलायतन (अन्यमतों की समीक्षा : जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में – पाँचवां अध्याय) आदि विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। मंच संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं मंगलाचरण श्री साकेत जैन ने किया।

दिनांक 14 अक्टूबर को अन्तिम सत्र के अध्यक्ष डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कैलाशचन्दजी छाबड़ा मुम्बई मंचासीन थे।

वक्ताओं के रूप में डॉ.वीरसागरजी जैन दिल्ली (मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ की प्रमुख विशेषताएँ), डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई (चार प्रकार की इच्छा दु:ख का सामान्य स्वरूप), डॉ. मनीष जैन खतौली (टोडरमलजी का क्रांतिकारी विवेचन उपदेश का स्वरूप) एवं पण्डित राजकुमारजी जैन बांसवाड़ा (सम्यक्त्व के विभिन्न लक्षणों में समन्वय और उपयोगिता) आदि विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

मंच संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण श्रीमती सुचिता जैन राघौगढ ने किया।

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का –

राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 16वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर रविवार, दि. 13 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल के. मोटाणी मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेशकुमारजी लुहाड़िया दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन दिल्ली, श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन दिल्ली, श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली, श्री मंगलसेनजी जैन दिल्ली, श्री जे.के. जैन दिल्ली, श्री मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, श्री नितिन सी. शाह मुम्बई आदि अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

राजस्थान की कार्यकारिणी के अन्तर्गत पण्डित अभयकुमारजी देवलाली (परामर्शदाता), पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा (प्रदेश महामंत्री), श्री अजितजी शास्त्री अलवर (प्रदेश उपाध्यक्ष), डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर (प्रदेश उपाध्यक्ष), श्री गणतंत्रजी शास्त्री आगरा (प्रचार मंत्री), श्री राजेशजी शास्त्री जयपुर (संभाग प्रभारी) एवं श्री संजयजी सेठी (अध्यक्ष-जयपुर महानगर) आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

जयपुर महानगर फैडरेशन की गतिविधियों का विवरण श्री संजयजी सेठी, दिल्ली व उ.प्र. प्रान्त की गतिविधियों का विवरण प्रमोदजी जैन (बड़ौत वाले) दिल्ली, राज.प्रदेश की गतिविधियों का विवरण प्रदेश मंत्री श्री राजकुमारजी जैन बांसवाड़ा ने दिया।

इसके अतिरिक्त श्री गणतन्त्रजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं सर्वोदय अहिंसा अभियान द्वारा प्रकाशित दीपावली पर पटाखे न फोड़ने सम्बन्धी पोस्टर का विमोचन डॉ. भारिल्ल आदि सभी मंचासीन महानुभावों द्वारा किया गया।

मंच संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण श्री सम्यक् अजित जैन अलवर ने किया।

ताम्रपत्र पर ग्रन्थ

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्ददेव द्वारा विरचित नियमसार व पंचास्तिकाय ग्रन्थ की ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कृति का विमोचन दिनांक 12 अक्टूबर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हुआ।

ज्ञातव्य है कि पूर्व में समयसार ग्रन्थ भी ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हो चुका है तथा अब प्रवचनसार व अष्टपाहुड पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

E-mail - ptmanojjain@gmail.com; Phone : +917599301008

51वाँ जैन धार्मिक शिक्षण शिविर

चेन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र, आचार्य कुन्दकुन्द तत्त्वप्रचार केन्द्र एवं श्री आदि भगवान दिगम्बर जैन मंदिर, आदमबाक्कम के संयुक्त तत्त्वावधान में 51वाँ जैन धार्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 11 से 13 अक्टूबर तक आयोजित किया गया। श्री आदि भगवान दिगम्बर जैन मंदिर, आदमबाक्कम में संपन्न इस शिविर में पहली बार तमिल के अतिरिक्त हिन्दी में भी कक्षायें ली गई। वयोवृद्ध विद्वान पण्डित सिंहचन्द्रजी जैन शास्त्री के निर्देशन में पण्डित जम्बूकुमारन जैन शास्त्री, डॉ. उमापति जैन शास्त्री, पण्डित अशोक कुमार जैन शास्त्री, पण्डित नाभिराजन जैन शास्त्री, पण्डित जयकुमार जैन शास्त्री एवं पण्डित विनोदकुमार जैन शास्त्री आदि विद्वानों ने कक्षायें लीं। अंतिम दिवस परीक्षा भी ली गई तथा हिन्दी व तमिल में प्रथम तीन स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को अलग-अलग पुरस्कृत भी किया गया।

महाविद्यालय की गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 सितम्बर को रात्रि 9 बजे **'धर्म के दशलक्षण'** विषय पर शास्त्री वर्ग की गोष्ठी आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता पण्डित राजेश कुमारजी शास्त्री शाहगढ ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रवीण जैन अमरमऊ (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं अंकुर जैन धार रहे।

आभार प्रदर्शन व ग्रन्थ भेंट पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 29 सितम्बर को **'सप्ततत्त्व'** एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में निकुंज जैन खड़ैरी कनिष्ठ उपाध्याय एवं अर्पित जैन ललितपुर वरिष्ठ उपाध्याय रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अनेकान्त शास्त्री रहली कनिष्ठ उपाध्याय ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने किया।

गोष्ठी का संचालन नीशू जैन एवं आशीष जैन शास्त्री तृतीय वर्ष ने किया।

दिनांक 20 अक्टूबर को **'जैनधर्म के आलोक में ध्यान'** विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता डॉ. कुसुम जैन (पूर्व प्राचार्या-महारानी कॉलेज) जयपुर ने की।

गोष्ठी के विशिष्ट वक्ता के रूप में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से वैभव जैन गोरमी (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग से निखिल जैन मुम्बई (प्रथम वर्ष) रहे।

गोष्ठी का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थी जिनकुमार जैन चेन्नई जैन एवं अखिलेश जैन शाहगढ ने किया। ग्रन्थ भेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने किया।

टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा -

विशेष गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 16वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 11 अक्टूबर को **'पण्डित टोडरमलजी की मौलिक कृति मोक्षमार्ग प्रकाशक का मौलिक सातवाँ अधिकार'** विषय पर एक विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि श्री श्रेयांसकुमारजी जैन कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि श्री पृथ्वीचंदजी दिल्ली व श्री प्रदीपजी मोदी मकरोनिया सागर थे।

इस अवसर पर पीयूष जैन, संदीप सेठ, सौरभ जैन, अनुभूति जैन, अभिषेक जैन, नितिन जैन, प्रशांत जैन, ईर्या जैन, सचिन जैन आदि विद्यार्थिओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय वर्ग से पीयूष जैन एवं शास्त्री वर्ग से अनुभूति जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे।

संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्र सुमतिनाथ अंबेकर और साकेत जैन ने एवं मंगलाचरण समकित जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

शोक समाचार

1. कानपुर (उ.प्र.) निवासी श्री राजकुमारजी जैन (राजू भाई) का दिनांक 29 सितम्बर को 62 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जैन अध्यात्म को समर्पित एक लौह पुरुष थे। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित व अत्यन्त सक्रिय थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1001/- रुपये प्राप्त हुये।

2. जयपुर (राज.) निवासी श्री रसिकलालजी मोतीचन्दजी दोशी का दिनांक 24 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 11 हजार रूपये संस्था को प्राप्त हुये।

3. बानपुर (उ.प्र.) निवासी पण्डित कैलाशचन्दजी की माताजी **श्रीमती छोटीबाईजी** का दिनांक 24 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

तत्त्वार्थसूत्र पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत टीका –

तत्त्वार्थमणीप्रदीप का विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ शिविर के अवसर पर रविवार, दि. 13 अक्टूबर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित तत्त्वार्थसूत्र की टीका **'तत्त्वार्थमणीप्रदीप' पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय तक)** का विमोचन भव्य समारोहपूर्वक श्री गजेन्द्रकुमारजी पाटनी मुम्बई एवं शिविर में पधारे देशभर के अनेक गणमान्य अतिथियों/विद्वानों के करकमलों द्वारा किया गया। 20/- रुपये कीमत वाले 5 हजार प्रतियों के इस प्रथम संस्करण पर श्री कान्तिभाई मोटानी परिवार मुम्बई के सहयोग से 5/- रुपये की छूट प्रदान की जा रही है। इस अवसर पर श्री गजेन्द्रकुमारजी पाटनी मुम्बई द्वारा साहित्य प्रकाशन हेतु 2.5 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई।

इसी अवसर पर डॉ0 संजीवकुमारजी गोधा द्वारा काल द्रव्य का स्वरूप एवं षट् काल परिवर्तन व्यवस्था का वर्णन करने वाली **'कालचक्र'** नामक पुस्तक का विमोचन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से हुआ। प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन अ.भा.दिग.जैन विद्वत्परिषद ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

इसके अतिरिक्त नयों के स्वरूप का विश्लेषण करने वाली डॉ0 भारिल्ल की दार्शनिक कृति परमभाव प्रकाशक नयचक्र की सरल सुबोध व्याख्या करने वाली पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली कृत **'नयरहस्य'** नामक पुस्तक तथा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल कृत **'पंचास्तिकाय परिशीलन'** आदि कृतियों का भी विमोचन किया गया।

उक्त पुस्तकें पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर से प्राप्त की जा सकती हैं।

शीतकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर द्वारा पाठशाला के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने हेतु दिनांक 24 सितम्बर से 6 अक्टूबर तक भिण्ड समाज के विशेष आमंत्रण पर शीतकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों की बालबोध सैद्धांतिक की कक्षा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, बालबोध शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा तथा अभ्यास कक्षायें पण्डित नरेन्द्रजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित निखलेशजी दलपतपुर द्वारा ली गई। शिविर में लगभग 64 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

शिविर का आयोजन श्री महावीर दि.जैन परमागम मंदिर भिण्ड के तत्त्वावधान में पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री (सुनीलजी शास्त्री) के संयोजकत्व में किया गया। साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड द्वारा समयसार एवं पण्डित महेन्द्रजी द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।